ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 04 मई 2025

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

सप्ताह रविवार, 04 मई 2025 से 10 मई 2025

वैशाख शु. 07 ● वि० सं०-2081 ● वर्ष 66, अंक 18, प्रत्येक मंगलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 201 ● सृष्टि-संवत् 1,97,29,49,125 ● पृ.सं. 1-12 ● मूल्य - 5/- रू. ● वार्षिक शु. 300/- रू.

डी.ए.वी. इंटरनैशनल अमृतसर में हुआ महात्मा हंसराज जयंती पर विशेष अग्निहोत्र

डी.ए.वी. इंटरनेशनल स्कूल में 19 अप्रैल को त्यागमूर्ति महात्मा हंसराज जी की पावन जयंती के अवसर पर विशेष अग्निहोत्र का आयोजन किया गया। प्रिंसीपल डॉ. अंजना गुप्ता ने उपस्थिति को सम्बोधित करते हुए महात्मा हंसराज जी की जयंती पर सभी को हार्दिक बधाई दी और कहा कि त्यागमूर्ति महात्मा हंसराज जी का संपूर्ण जीवन हमारे लिए प्रेरणा स्रोत है। वे सादगी की प्रतिमूर्ति थे। समाज सेवा और मानव कल्याण वैदिक संस्कृति एवं आर्य समाज के प्रचार–प्रसार हेतु उन्होंने अपना सर्वस्व अर्पित कर दिया। शिक्षा के क्षेत्र में उनका योगदान अविस्मरणीय

है। उनके पदचिह्नों पर चलते हुए भारत को उन्नति की ओर ले जाना ही उनको सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

विद्यार्थियों द्वारा महात्मा जी को समर्पित वैदिक भजन प्रस्तुत किए गए। छात्र–छात्राओं ने महात्मा हंसराज जी की संपूर्ण जीवन यात्रा का व्याखान किया। डी.ए.वी. की स्थापना में महात्मा जी के विशेष योगदान की विशेष चर्चा हुई।

इस अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

आर्यरत्न डॉ. पूनम सूरी जी पद्मश्री अलंकृत, प्रधान डी.ए.वी. प्रबन्धकर्त्री समिति, विद्यालय के निर्देशक, चेयरमैन, और प्रबंधक ने इस अवसर पर सब को बधाई दी।

डी.ए.वी., अंबाला शहर में आर्यसमाज स्थापना पर हुए विभिन्न कार्यक्रम

डी.ए.वी. सीनियर सेकेंडरी विद्यालय, अंबाला शहर में आर्यसमाज के 151वें स्थापना दिवस का उत्सव श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर विद्यालय में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसमें विद्यार्थियों, शिक्षकों और अभिभावकों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया।

पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी की पुण्यतिथि और महात्मा आनंद स्वामी के गिरफ्तारी दिवस पर विशेष श्रद्धांजलि अर्पित की गई। विद्यालय के प्राचार्य ने इन महापुरुषों के योगदान को स्मरण करते हुए कहा कि इनका जीवन आज भी हमें प्रेरणा देता है। उन्होंने बताया कि विद्यालय के प्रमुख ब्लॉकों का नामकरण आर्य समाज के महान विभूतियों के नाम पर किया गया। इस पहल से विद्यार्थियों को इन महापुरुषों के विचारों से प्रेरणा मिलेगी।

विद्यालय में डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंध समिति के प्रधान, डॉ. पूनम सूरी जी के जन्मदिवस को विशेष रूप से मनाया गया। इस अवसर पर विद्यालय के बाहर ऋषि लंगर की व्यवस्था की गई, जिसमें लगभग 1000 की संख्या में लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया।

महात्मा आनंद स्वामी की स्मृति में योग प्राणायाम प्रशिक्षण शिविर का आयोजन भी किया गया। इस अवसर पर प्राचार्य महोदय ने पूर्व विद्यार्थियों को सम्मानित किया।

डी.ए.वी. जयपुर में महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जयन्ती पर हवन का आयोजन

डी.ए.वी. सेंटेनरी पब्लिक विद्यालय, जयपुर के प्रांगण में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में विद्यालय परिवार के सदस्यों तथा अभिभावकों के साथ मिलकर यज्ञ का आयोजन किया गया। हवन के उपरान्त, प्रधानाचार्य श्री अशोक कुमार शर्मा ने स्वामी दयानन्द जी के जीवन, उनके आदर्शों और भारतीय संस्कृति में उनके योगदान के बारे में बताया। इस अवसर पर माननीय प्रधानाचार्य ने यज्ञ का अर्थ, उद्देश्य व उसका महत्व भी समझाया।

अभिभावकों को भी ऐसे अवसरों पर अपने बच्चों के साथ धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया गया, ताकि बच्चे नैतिक मूल्यों को ग्रहण कर सकें। उन्होंने अभिभावकों को बताया कि यज्ञ एक ऐसा पवित्र कर्म है जो परमार्थ के लिए किया जाता है। जीव हितार्थ सभी को समय–समय पर इस यज्ञ रूपी पवित्र कर्म को करना चाहिए तथा इसमें सहभागिता देनी चाहिए।

अन्त में धन्यवाद ज्ञापित करते हुए शान्तिपाठ व प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

जो सब जगत् के पदार्थों को संयुक्त करता और सब विद्वानों का पूज्य है और ब्रह्मा से लेके सब ऋषि मुनियों का पूज्य था, है और होगा, इससे उस परमात्मा का नाम **'यज्ञ'** है। क्योंकि वह सर्वत्र व्यापक है। स. प्र. समु. १

{संपादक – पूनम सूरी}

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 04 मई 2025 से 10 मई 2025

हम तेरे सम्मुख मूढ़ हैं

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

मूरा अमूर न वयं चिकित्वो, महित्वमग्ने त्वमङ्ग वित्से।
शये वव्रिश्चरति चिह्वयाऽदन्, रेरिह्यते युवतिं विश्पतिः सन्।।

ऋग् १०.४.४

ऋषिः **त्रितः आप्त्यः**। देवता **अग्निः**। छन्दः **त्रिष्टुप्**।

● (**अङ्ग**) हे, (**अमूर**) अमूढ़, (**चिकित्वः**) ज्ञानी, (**अग्ने**) परमेश्वर!, (**मूराः**) मूढ़, (**वयं**) हम, (**महित्वं**) महत्ता को, (**न**) नहीं [जान पाते]।, (**त्वं**) तू, (**वित्से**) जानता है। [हमारा], (**वव्रिः**) रूपवान् आत्मा, (**शये**) सोया पड़ा है, (**जिह्वया**) जिह्वा [आदि इन्द्रियों] से, (**अदन्**) भोग करता हुआ, (**चरति**) विचरता है, (**विश्पतिः सन्**) राजा होता हुआ [भी], (**युवतिं**) प्रकृति–रूप युवति को, (**रेरिह्यते**) अतिशय पुनः–पुनः चाट रहा है।

● हे अग्ने! हे तेजोमय ज्ञानी प्रभु! हम मूढ़ हैं, तुम अमूढ़ हो। हम तो यह भी नहीं जानते कि 'महत्ता' किसका नाम है, महत्त्व प्राप्त करना किसे कहते हैं। हम तो समझते हैं कि सांसारिक दृष्टि से महिमाशाली होना, हाथी, घोड़े, रथ, सेवक आदि का स्वामी हो जाना ही महत्ता है। हमारा तो विचार है कि नचिकेता को यम ने जिस सांसारिक धन–दौलत, पुत्र–पौत्र, भूमि के राज्य आदि सम्पत्ति के प्रलोभन में फँसाना चाहा था, उस सम्पत्ति को पा लेना ही महत्ता है। पर हम मूढ़ अज्ञानियों के ऊपर रहनेवाले अमूढ़ ज्ञानी तुम जानते हो कि सच्ची 'महत्ता' क्या है।

हमारा रूपवान् आत्मा सोया पड़ा है, उसे यही चेतना नहीं है कि मैं किसलिए इस शरीर में आया हूँ, मेरा लक्ष्य क्या है मुझे किधर जाना है। वह जिह्वा आदि इन्द्रियों से निरन्तर भोगों को भोगने में आसक्त हुआ विचर रहा है और इस भोग भोगने में ही अपने जीवन की इतिश्री मान बैठा है। भगवान् ने उसे 'विश्पति' बनाया है, शरीर–नगरी का राजा बनाया हैं, जिसमें मन, बुद्धि, प्राण, इन्द्रियाँ आदि अनेक प्रजाएँ निवास करती हैं। उसे इस शरीर–नगरी को ईश्वरीय साम्राज्य बनाना चाहिए था, अध्यात्म–साधना द्वारा आध्यात्मिक दृष्टि से उन्नत राष्ट्र बनाना चाहिए था। शरीर–राष्ट्र को भोगों से जर्जर न कर सबल, सप्राण और समनस्क करना चाहिए था। पर धिक्कार है इस आत्मा को! यह तो एक 'युवति' को चाट रहा है, अतिशय पुनः–पुनः चाट रहा है। प्रकृति ही यह युवति है जो नटी बनकर आत्मा को अपने साथ नचा रही है, भोग भुगा रही है। आत्मा प्रकृति को चाट रहा है, प्रकृति आत्मा को चाट रही है। इस प्रकार आत्मा लौकिक भोग–विलासों में आनन्द ले रहा है।

हे मेरे आत्मन्! इस मूढ़ता को त्यागो, अपने अन्दर ज्ञान की ज्योति जगाओ, 'सच्ची महत्ता क्या है' इसे जानो, सोते से उठ खड़े हो, इन्द्रियों के वशीवर्ती न हो, अपितु इन्द्रियों के स्वामी बनो। प्रकृति को न चाटकर परम प्रभु के अमृत–रस का आस्वादन करो। तुम्हारा उद्धार होगा, तुम महिमाशाली बन जाओगे।

❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

तत्त्वज्ञान

● महात्मा आनन्द स्वामी

'दार्शनिकों, आचार्यों द्वारा रचित अनेक ग्रन्थों का प्रयोजन संसारी लोगों को दुःखों से मुक्त करना है' ऐसा कहकर स्वामी जी ने वास्तविक तत्त्व तक पहुँचने के लिए सृष्टि विज्ञान को जानने पर बल दिया। वैज्ञानिकों की समझ से परे इस विश्व के रहस्य को प्राचीन ऋषियों ने समाधि–अवस्था में देख लिया था।

इस ब्रह्माण्ड की सामग्री –**त्रि सप्त समिधः**– 21 प्रकार की है– ये इक्कीस समिधा कहाती हैं। यह भी बताया कि परमात्मा ने पृथिवी, जल, अग्नि, वायु तथा आकाश कैसे रचा।

उत्पति से पूर्व जगत् किस अवस्था में था इसकी चर्चा की। ईश्वर की सामर्थ्य से कारण रूप जगत् कार्य रूप में परिणत हो जाता है। मनुष्य शरीर आदि की चर्चा कर सकाम कर्म और निष्काम कर्म के महत्व पर प्रकाश डाला।

वेद की बात कहने के बाद दर्शनों और अन्य शास्त्रों में प्राप्त सृष्टि उत्पत्ति संबन्धी निष्कर्षों की बात की। महाप्रलयकाल में सृष्टि की स्थिति पर चर्चा की और ब्रह्म के सामर्थ्य से त्रिगुणात्मिका प्रकृति में गति होने के पश्चात् महत्तत्त्व, अहंकार, मन, पंचतन्मात्राओं का वर्णन किया और इनसे यथाक्रम आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथिवी के उत्पन्न होने की बात कही। इनसे नाना ओषधियों, वनस्पतियों और वृक्ष आदि की उत्पत्ति बतलाई। अन्न, वीर्य और शरीर इनसे बने। यह क्रिया इस पृथिवी पर ही नहीं अपितु करोड़ों भूगोलों, सूर्यों, चन्द्रादिकों में भी है। लोक लोकान्तरों में इस पृथिवी का परिमाण क्या है? यह बताया।

एकादश इन्द्रियों, चौबीस अनात्म तत्त्वों की बात की। योगदर्शन के आधार पर इस सारे प्रपंच का प्रयोजन बताया कि यह जीवात्मा के हितार्थ ही है। सृष्टि के 24 तत्त्व आत्मा, मन, इन्द्रियों और अर्थ के उत्तरोत्तर संयोग से कार्य करते हैं। **...अब आगे**

पश्चिमी विद्वान् भी आत्मा को मानते हैं–

यदि पश्चिमी वैज्ञानिकों से पूछा जाए तो वे भी यही कहते हैं– आत्मा अवश्य है। 'Science and Religion by Seven Men of Science' के 50वें पृष्ठ पर प्रोफेसर डब्ल्यू. बी. बॉटमली का यह सिद्धान्त है–"भौतिक अथवा रासायनिक विज्ञान मनुष्य को सन्तुष्ट नहीं कर सकता। इनसे बढ़कर और भी कोई वस्तु है। हममें से प्रत्येक के हृदय में कोई वस्तु है जो उच्च और मनुष्य को मनुष्य बनानेवाले उद्देश्यों की ओर प्रेरित करती है। प्रत्येक वस्तु की विज्ञान से व्याख्या नहीं की जा सकती, वह वस्तु प्राकृतिक जगत् से ऊपर की वस्तु है और वही जीवात्मा है।"

इस प्रकार इसी पुस्तक के 10वें पृष्ठ पर भूगर्भ विद्या के निपुण विद्वान् प्रोफैसर एडवर्ड हुल (Prof. Edward Hull) का अनुभव दिया गया है। वे लिखते हैं :

"भूगर्भ–विज्ञान जगत् के शासक और रचयिता की सत्ता प्रमाणित करता है। साठ वर्ष अर्थात् अपने शिक्षाकाल से अब तक भूगर्भ– विद्या को मैं निरन्तर ऐसा ही समझता और मानता चला आ रहा हूँ। भूगर्भ विद्या बतलाती है कि एक समय था जब किसी प्रकार का जीवन पृथिवी पर नहीं था परन्तु अब जीवन विद्यमान है इसलिए अवश्य उसका प्रारम्भ किसी समय हुआ होगा। इसके साथ ही यह बात भी है कि अभाव से अभाव ही उत्पन्न होता है, अभाव से भाव नहीं होता इसलिए अवश्य जगत् के रचयिता की सत्ता माननी पड़ती है। उसी ने प्राकृतिक जगत् रचा और जीवन को प्रादुर्भूत किया – यह भी स्वीकार करना पड़ता है।"

प्रोफैसर सिलवानस थॉम्पसन {Science and Religion by Seven Men of Science, 1.115–129.} ने तो ईश्वर, जीव, प्रकृति, तीनों की अनादि सत्ता स्वीकार की।

प्रकृति के सारे भौतिक पदार्थों की कार्य–प्रणाली को देखकर सर ऑलिवर लॉज (Sir Oliver Lodge) ने अपनी पुस्तक 'Survival of Man' में स्पष्ट लिखा है– "मेरा विचार यह है कि एक आत्मिक सत्ता चित्त में है जो यह सब कार्य करती है। वही इच्छा को प्रभावित करती है, उसी सत्ता द्वारा उत्तेजना

डी.ए.वी. बी.एस.इ.बी. पटना ने सामाजिक कुरीतियों को दूर करने का दिया संदेश

डी.ए.वी. बीएसइबी स्कूल पटना की ओर से आयोजित चार दिवसीय चरित्र निर्माण शिविर के तीसरे दिन सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करने के लिए स्वामी दयानंद सरस्वती के जीवन मूल्यों, आर्यसमाज के आदर्श व मानवता से परिपूर्ण संदेश से परिपूर्ण विभिन्न झांकियां प्रस्तुत की गयी।

बच्चों द्वारा निकाली गयी शोभायात्रा में 49 स्कूलों के करीब 1200 विद्यार्थियों ने भाग लिया। गाजे–बाजे और रथ के साथ निकाली गयी शोभायात्रा लोगों के आकर्षण का केंद्र बनी रही। शोभायात्रा का नेतृत्व आर्य समाजी सिक्किम और मेघालय के पूर्व राज्यपाल गंगा प्रसाद ने किया। बच्चों ने इस झांकी में भारत की महान संस्कृति, ऋषि–मुनियों की जीवन शैली व आर्य समाज के जीवन मूल्यों को जीवंत रूप में दर्शाया।

डी.ए.वी. न्यू पनवेल में विद्यालय के स्थापना दिवस पर हवन का आयोजन

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, न्यू पनवेल (मुंबई) में 19 अप्रैल 2025 को प्रातः कालीन प्रार्थना सभा में विद्यार्थियों द्वारा विद्यालय के स्थापना दिवस एवं हंसराज जी के जीवन के बारे में अपने विचारों को प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर हवन और भजन का आयोजन किया गया।

महात्मा हंसराज जी के जन्मदिवस के पावन उपलक्ष्य पर छात्रों और अध्यापकों द्वारा उनके त्याग का स्मरण किया गया। प्रधानाचार्य सुमंत घोष ने उनकी जीवनी पर प्रकाश डाला। आनंदमय वातावरण में पाठशाला में वैदिक मंत्रोच्चारण करते हुए ईश्वर से प्रार्थना की गई।

कक्षा षष्ठी से नवमी तक के विद्यार्थियों द्वारा संगीत विभाग की सहायता से ***'धन्य है तुझको ऐ ऋषि तूने हमें जगा दिया'*** इस गीत को प्रस्तुत किया। यज्ञ में यजमान के स्थान पर प्रधानाचार्य महोदय श्रीमान् सुमंत घोष विराजमान हुए। ब्रह्मा के स्थान पर अध्यापिका माया महोदया और ज्योति महोदया आसनस्थ थे। उनके साथ कक्षा दसवी के छात्र और प्राथमिक कक्षा के अध्यापक भी उपस्थित थे। विद्यार्थियों द्वारा सृजनात्मक रूप से पोस्टर निर्माण किया गया जिसमें आर्य समाज और विद्यालय की स्थापना दिवस को प्रदर्शित किया गया। भक्ति पूर्ण वातावरण में अल्पाहार एवं प्रसाद का वितरण किया गया।

उसके पश्चात् शांति पाठ किया गया।

डी.ए.वी. नारायणगढ़ में मंत्रोच्चारण प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

डी.ए.वी. पब्लिक (सीनियर सेकेंडरी) विद्यालय नारायणगढ़ में मंत्रोच्चारण प्रतियोगिता का आयोजन हर्षोल्लास से किया जिसमें कक्षा पाँचवीं, छठी व सातवीं तक के 44 विद्यार्थियों ने उत्साह–पूर्वक भाग लिया।

प्रतियोगिता का प्रारंभ गायत्री मंत्र द्वारा किया गया तत्पश्चात् विद्यार्थियों ने कंठस्थ मंत्रों का विधिपूर्वक उच्चारण करके सबको मंत्रमुग्ध कर दिया।

निर्णायक मंडल ने उच्चारण, भाषा शुद्धता, हाव–भाव और गतिलय के आधार पर प्रतिभागियों को अंक दिए।

प्रधानाचार्य डॉ. आर.पी. राठी ने महर्षि दयानंद जयंती की शुभकामनाएँ दी और प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान पर आने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया व अन्य प्रतिभागियों के प्रयासों को सराहा। उन्होंने कहा कि हर वर्ष की भाँति स्वामी दयानंद जयंती पखवाड़े के अंतर्गत विद्यालय में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं जिनका उदेश्य बच्चों को स्वामी दयानंद के सिद्धांतों और वैदिक संस्कृति से अवगत कराना है।

स्कूल के चेयरमैन भूतपूर्व जस्टिस प्रीतम पाल जी ने सभी विद्यार्थियों को शुभकामनाएँ दीं और कहा कि डी.ए.वी. संस्थाएँ लोगों में वेदों के शाश्वत मूल्यों के प्रचार एवं प्रसार के लिए पूरी तरह समर्पित हैं। वेदों का ज्ञान जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाता है। प्रतियोगिता का समापन शांति पाठ द्वारा किया गया।

आर्य समाज मानव सेवा के 150 स्वर्णिम वर्ष 1875 - 2025

Registration No. R.N.I. 39\57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11\6066\2024-25-26
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103\2024-25-26
Posted at L.P.C.(Delhi RMS)D110006 ON Wednesday & Thursday, 2025

डी.ए.वी. पुष्पांजलि में महात्मा हंसराज जी के 161वें जन्म दिवस पर यज्ञ

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल पुष्पांजलि (दिल्ली) में त्यागमूर्ति महात्मा हंसराज जी के 161वें जन्मदिवस पर यज्ञ का आयोजन किया गया। इस यज्ञ में 30 उन छात्र–छात्राओं ने भाग लिया। जिनका आज जन्म दिन था।

प्रधानाचार्या श्रीमती रश्मिराज बिस्वाल ने अपने संबोधन में महात्मा हंसराज जी के आदर्श और प्रेरणीय जीवन की यशगाथा की चर्चा करते हुए कहा कि महात्मा हंसराज जी का जीवन महानता की पराकाष्ठा है। भला कैसे कोई व्यक्ति बचपन में अभाव को जी कर, शिक्षित और सामर्थ्यवान होकर भी देश, संस्कृति और ऋषि दयानन्द

जी शिक्षाओं की रक्षा के लिए, बिना वेतन लिए डी.ए.वी. आंदोलन के लिए अपने जीवन को हूत कर सकता है, पर महात्मा हंसराज जी ने इस विलक्षण स्थिति को डी.ए.वी. के लिए 25 वर्ष तक जीया और फिर पूरा जीवन आर्य समाज के मूल्यों को प्रासंगिक बनाने के लिए हूत कर दिया। प्रधानाचार्या ने कहा कि महात्मा जी के पुरुषार्थ से सिंचित डी. ए.वी. संस्थाएं आज भी हमें विशेष करने की प्रेरणा देती है और इसके लिए हमें केवल स्वयं के कार्यों के प्रति ईमानदार बनने की आवश्यकता है। प्रधानाचार्या ने उन सभी छात्र–छात्राओं को जन्म दिन की शुभकामनाएँ दीं, जिनका जन्म महात्मा हंसराज जी के जन्म दिन 19 अप्रैल को ही है।

तरुण एंक्लेव शाखा से महात्मा जी के वेश भूषा पहन करके आए बच्चों को आशीर्वाद और शुभकामनाएँ दी गईं। शांतिपाठ, प्रसाद वितरण के बाद कार्यक्रम समाप्त हुआ।

एलआरएस डी.ए.वी. अबोहर में पर्यावरण उपयोगी पत्तों के दोनों का हुआ निर्माण

एलआरएस डी.ए.वी. सीनियर सेकेंडरी मॉडल स्कूल अबोहर के विद्यार्थियों ने पर्यावरण सुरक्षा को महत्व प्रदान करते हुए पत्तों से आकर्षक दोने बनाए और संकल्प लिया कि वे सभी प्लास्टिक की कटोरियों के स्थान पर इनका उपयोग करेंगे। इससे बच्चों में प्लास्टिक का प्रयोग न करने की प्रेरणा

जागृत हुई और उन्होंने अत्यंत उत्साह से इस गतिविधि में भाग लिया।

विद्यालय के अध्यापक और इको क्लब के इंचार्ज श्रीमती रेखा और श्री अंकुश ने बच्चों को दोने बनाने सिखाए और उनका महत्व भी समझाया। विद्यालय में प्लास्टिक की चीज़ों का यथासंभव प्रयोग भी नहीं किया जाता है।

उल्लेखनीय है कि यह अभियान जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा चलाया गया है और इसकी नोडल एजेंसी डीएवी कॉलेज जालंधर, पंजाब राज्य विज्ञान प्रौद्योगिकी परिषद (पी.एस.सी.एस.टी) हैं। उनके मार्गदर्शन में डीएवी स्कूल, अबोहर निरंतर इस अभियान में सक्रिय है।

विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती स्मिता शर्मा के प्रोत्साहन से इको क्लब ऐसी विभिन्न गतिविधियों को मूर्त रूप देता रहा है।

बी.बी.के. डी.ए.वी. कॉलेज फॉर विमेन अमृतसर में 54वें दीक्षान्त समारोह

बी.बी.के. डी.ए.वी. कॉलेज फॉर विमेन में 54वां दीक्षांत समारोह आयोजित किया गया, जिसमें माननीय प्रो. (डॉ.) कर्मजीत सिंह, कुलपति गुरु नानक देव विश्वविद्यालय अमृतसर मुख्य अतिथि

एवं अमृतसर के मेयर माननीय सरदार जतिन्दर सिंह मोती भटिया विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

कॉलेज प्राचार्या डॉ. पुष्पिन्दर वालिया ने महाविद्यालय की वार्षिक रिपोर्ट पढ़ी तथा अकादमिक, खेल, सांस्कृतिक एवं अन्य गतिविधियों में राज्य, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तरीय उपलब्धियों पर प्रकाश डाला।

मुख्य अतिथि प्रो. (डॉ.) कर्मजीत सिंह ने अपने 'दीक्षान्त सम्भाषण' में महिला सशक्तिकरण में बी.बी.के. डी.ए.वी. के योगदान को स्वीकार किया। उन्होंने कहा कि कड़ी मेहनत और दृढ़ इच्छा शक्ति से असफलता में छुपी सफलता को प्राप्त कर सकते हैं।

सम्माननीय अतिथि सरदार जतिन्दर सिंह मोती भटिया ने छात्राओं को बधाई देते हुए देश के हर कार्य क्षेत्र में महिलाओं को एकीकृत करने के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने युवा स्नातिकायों को आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया।

दीक्षान्त समारोह में कला, वाणिज्य, विज्ञान, पत्रकारिता, अर्थशास्त्र, कंप्यूटर विज्ञान, मल्टीमीडिया और फैशन डिजाइन के विभिन्न विषयों के 500 से अधिक स्नातक और स्नातकोत्तरों को डिग्रीयाँ प्रदान की गई।

चेयरमेन श्री सुदर्शन कपूर द्वारा उपस्थिति का आभार ज्ञापित किया गया।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **फर्स्ट इम्प्रैशन कार्पोरेट सर्विसिज, (प्रा.) लि.,** ई.113–114, सैक्टर–63, नोएडा, उ.प्र.–201301 (दूरभाष : 120–4246315) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**